चतुर्थ अध्याय

मालती जोशी की कहानियों की विशेषताएँ —

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

मालती जोशी की कहानियों की विशेषताऐं

समकालीन हिन्दी लेखिकाओं में मालती जोशी का नाम लोकप्रिय है। इनकी कहानियों में समकालीन विशेषताओं की झलक दृष्टिगोचर होती है । आठवे दशक की युवा पीढियों में मालती जोशी का ऐसा नाम जुड गया है जिसकी अपनी अलग पहचान है ।

इनकी कहानियों की विशेषता यह है कि इनकी कहानियाँ आधुनिक जीवन के संबंध में नारी की विभिन्न पहलू ओं का दर्शन कराती है । आप नारी स्वातंत्र्य की सूत्रधार है इन्ही विशेषताओं की झलक आपकी कहानियों में अंकित हुआी है । आपकी कहानियाँ ' नारी दर्द ' का स्वरुप दिखाने में कुशल लगती है । नारी जीवन की अनेक समस्याओं को अपनी कहानियों में विशेष रुप से सराहा गया है । विषय की विविधता, भिन्नता भी इनकी कहानियों की विशेषता है । युवती की समस्या ओं का ही केंद्रीय स्तर पर रखा गया है युवती के जीवन के सवालों को उठाकर अविवाहिता, विवाहिता, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, स्तरपर जूझती नारी अंतर्व्दव्द से पीडित नारी, आदि नारी जीवन के रहस्य को खोल देना ही कहानियों की विशेषता है ।

हिन्दी कहानी में प्रतिबिंबित नारी को समय की पुकार के रुप में अधिक स्वतंत्र चित्रित करने का श्रेय मालती जोशी को ही दिया जाना चाहिए । इन्होंने अपनी कहानियो में नगरीय, महानगरीय शिक्षित नारी को हमारे सामने रखा है । इनकी कहानियों की नायिकाओं में खरापन होता है । नारी के विभिन्न रुप का दर्शन इनकी कहानी की दस्तावेज है । महाविद्यालयीन, युवती, शिक्षित प्रोढा, नौकरी शुदा नारी, सुखपूर्वक परिवारिक जीवन व्यतीत करनेवाली नारी, अविवाहित प्रौढाएँ दहेज जैसे भीषण प्रथा के कारण टूहती नारी, आदि नारी के विभिन्न रुप नजर आतें हैं ।

सामान्यत: मालती जोशी की कहानियाँ आम तौरपर पारिवारिक जीवन को चित्रित करती है इनकी कहानियाँ परिवारिक जीवन के ईर्द – गिर्द ही चक्कर काटसी है । इसी कारण मालती जोशी की लगभग अधिक कहानियाँ पारिवारिक जीवन के जीवंत चित्र है ।

'टूटने से जुडने तक ' 'कुहासे' बोल री कठपुतली, 'मन धुँआ,' साथी, 'कल्चर' आदि कहानियाँ 'दांपत्य जीवन से संबंधित है जिसमें नारी की मनोव्यथा चित्रित है ' टूटने से जुडने तक की नायिक माँ और पत्नी के रुप में मानसिक रुप से पीडित है । 'साथी' की 'अम्मा' पति को लेकर बेटे के यहाँ रहने पर भी संतुष्ट नही है । पति से अलग होने की कल्पना से ही कराह उठती है । ' बोल री कठपुतली' जीवन यापन करने के लिए मजबूर है । ''कुहासे' में 'स्वाति' के पास पति की मनोभावनाओं को समझाने के अभाव मे पति--पत्नी के बीच दूराव की खाई बढती है ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

इन कहानियों में पारिवारिक जीवन में संघर्ष करती नारी का ही चित्र चित्रित है । तथा इनकी कहानियों की आधार वस्तु मध्यमवर्गीय परिवार और उस परिवार के नारी – जीवन की स्थिती । इसमें माँ के रुप में, पत्नी के रुप में, वात्सल्य के रुप में मालती जोशी जी की नारी – सेवा, समर्पण, कर्तव्यशील, वात्सल्य तथा ममता की प्रतिमा के रुप में प्रतिबिंबित हुआी है ।

मालती जोशी की 'कलंक' कहानी में प्रेम के प्रबल पक्ष का दृष्टांत होता है । 'एक और देवदास' में 'गीता' प्रेम के खातिर अपने आप से संघर्ष करती आजीवन अविवाहित रहती है । वह अंततक अकेलेपन की पीडा सहती है । इस कहानी में मनोवैज्ञानिक अंर्तपीडा विद्यमान है । 'एाई आखर प्रेम का' 'जयंती' अपने प्रेमी के लिए कुँवारी रहकर 'दलजीत' के माता–पिता की सेवा के लिए खुद को समर्पित कर देती है । इस कहानी में प्रेम तत्व का प्रधान रुप से निर्वाह हुआ है । मालती जोशी की प्रेम कहानियों में त्यागमय, आदर्श, कर्तव्यशील नारी का ही दृष्टांत होता है '।

'प्रश्नों के भँवर' की कहानी में अनमेल विवाह का चित्र अंकित है जिसमें 'सुनील की पत्नी का मानसिक स्तर से जूझने की सिति चित्रित है । 'अक्षम्य' कहानी में श्याम 'बिंदू' नाम की लडकी को तलाक देकर, अयोग्य समझता है पर 'गीता' के साथ शादी करने के उपरांत भी दु:खीही रहा । 'परायी बेटी का दर्द' में 'गीता' को पति की नापसंद पत्नी बनकर रहना पसंद नही है, इसी कारण वह खुदखुशी कर देती है ।

'नारी शिक्षा की समस्या' को लेकर लिखी गयी कहानियाँ -- 'आखरी शर्त' 'सन्नाटा' ' रानियाँ ' आधुनिक परिवेश में नारी की अधिक शिक्षा के कारण संभाव्य समस्या का चित्रण करती है । 'आखरी शर्त' में 'मधु' की माँ आई.ए.एस. परीक्षा में बैठने नहीं देती क्योंकि वह आई.ए.एस. बननने के बाद उसके लिए कमिशनर लडका ढूँढना पडेगा । इसी कारण उसकी शादी तय करती है । तो दुसरी " कुसुम " अपनी बेटी शीतल को नृत्य में पारंगत होने नही देती क्योंकि 'कुसूम' को इस बात का पता है कि भारतीय युवक कलाकार को पसंद करता है, पर कलाकार के साथ शादी करना पसंद नही करता । 'सन्नाटा' की "उत्तरा" पी.एच.डी. की व्याख्याता हाते हुए भी अपने घर में अकेलेपन की भावना से ग्रस्त है । 'रानियाँ' कहानी की 'वंदना' पढी–लिखी, शिक्षित होने का हामी भरती है पर डॉ.कुमार जैसे शादीशुदा व्यक्ति के जाल में फँस जाती है । जो उसके साथ धोका करता है ।

'सती' कोड न जाननहार 'संदर्भहीन', मोरी रंग दी चुनरियाँ 'बेडियाँ' कहानियों में विधवा नारी की मानसिक व्यथा चित्रित है, जो विधवा स्त्रीयों के साथ हमेशा होता है । 'सती' कहानी में 'कांता' भाभी के रुप में विधवा माँ की मानसिक मनोव्यथा चित्रित है, जो बच्चों के लिए जीना चाहती है । उसकी सास उसे हर तरह से, सताने की चेष्टा करती है । ' कोड न जाननहार' में विधवा नारी की वेदना अंकित हुअी है जो माता -- पिता के घर में खपती, सब कुछ न्योछावर करके भी उसी परिवार से उसे माँ का स्वार्थ, घृणा, तिरस्कार के सिवा कुछ नही मिल सका ।' संदर्भहीन' में 'शोभा' की व्यथा चित्रित है, जो विधवा होने के उपरांत खोखली, जिंदगी जीनके पर मजबूर है । यहाँ तक कि, शोभा को किसी का प्यार तर बर्दास्त नही हो पाता । वह केवल अजनबी लोगों के बीच रहने की चाह रखती है ।

मालती जोशी की कई कहानियाँ अविवाहित नारी की घुटनभरी जिंदगी, वेदना, करुण दया चित्रित करती है जैसे – 'आखरी सौगात' की 'सुमन' परिवारवाले के लिए मरती – खपती,टूटती है लेकिन परिवारवाले उसे केवल पैसा कमानेवाली मशीन समझकर इस्तेमाल करते हैं । इसी कारण अखिर 'सुमन' दूहाजू 'डॉ.अलोक' से शादी करती है ।'पहली बार' में एक अविवाहित लडकी 'दिव्या' की नाराजी चित्रित है । 'कोहरेके पार' कहानी में 'शीला' की मानसिकता चित्रित है जिसे अविवाहित रहने के कारण ही अकेलापन महसूस होता है । स्वयंवर में "प्रभा" की मानसिक तौर से जूझने की स्थिती दृष्टिगोचर होती है । परिवार के लिए सब कुछ न्योछावर करके भी खुद के लिए एक घर ढुँढने के लिए विवश है । इसी कारण 'गोपाल दा' के यहाँ आश्रय के लिए याचना करती है ।

'बदलते संबंध' की समस्या पर लिखी कहानियो में, 'अस्ताचल' 'हमको दिया परदेश आदी आती हैं ' अस्ताचल' में परिवार में उम्र और वक्त के साथ बदलते चले संबंध का चित्र उपस्थित है ' कल्याणी' अपनी बेटी 'चित्रा' को गृहस्थी में मग्न देखकर नाराज होती है तो बेटा 'शिरीष' अपनी संगिनी रेणु को चुनकर माँ से बातें करना भी पसंद नही करता । इससे 'कल्याणी' का माँ ह्दय आक्रोश करने लगता है पर वह खुद को समझाती है कि 'इसी क्षण के लिए नारी सब कुछ सह लेती है' इसीमें नारी जीवन की सार्थकता होती है ।

मालती जोशी की नारी की ओर देखने की दृष्टि परंपरावादी भी है इनकी कई कहानियों में नारी का चित्रण दुर्बल, कमजोर, शोषित रुप में हुआ है । जैसे 'मानिनी' कहानी की "भोलू" निसंतान होने के कारण खुद को कमजोर समझती है पति के प्यार से वंचित रही है । 'संवेदना' में सुचि,मुचि के माता-पिता बेटियों के शादी के उपरांत 'सोनाली' को गोद लेकर अपना मन बहलाना चाहते है ।

'दहेज' समस्या पर आधारित कहानियों में बकुल । फिर आना 'कवच' में दहेज समस्या पीडित नारी चित्रित है ।

'दंभ के घेरें', 'छोटी बेटी का भाग्य', 'औकात' कहानी में आर्थिक विपन्नता से पीसते नारी का चित्र अंकित है । ' दंभ के घेरें' में माता –पिता के आर्थिक परिस्थिति के कारण 'नीता' को एक मामूली युवक से ब्याह करना पडा । 'छोटी बेटी का भाग्य' में मध्यमवर्गीय जीवन से जूझते नारी का चित्र उभारा है, जो अंततक अतृप्त ही रही इसी कारण पति के घृणा का पात्र भी ठहरी । 'औकात' में 'मीना' आर्थिक परिस्थिति के कारण नौकरानी की तरह जिंदगी जीने के लिए विवश है । उसे अविवाहित रहना पडता है ।

'मध्यांतर' 'आखरी सैगात' 'बेल री कठपुतली' में ' नौकरी पेशा 'नारी' का अंतर्द्वंद' चित्रित है ।

मालती जोशी ने यद्यपि नारी को, बहू, बेटी, पत्नी, मॉ, भाभी, बुआ, सास, आदि विविध रुपों में चित्रित किया है फिर भी अधिकांश कहानियों में "बडी दीदी" एवं मॉ का चरित्र ही बडे पैमाने पर चित्रित हुआ है ।

नारी सुलभ एवं बाल--सुलभ भाव--भावनाओं का यथार्थ अंकन मालती जोशी ने बडी सफलता के साथ किया है । नारी सुलभ कपडे, श्रृंगार, गहने, जुडा, कंगन रुप, वर्ण आदि विषयक वर्णन आपकी कहानियों में अधिक मात्रा में पाया जाता है । इनकी कहानियॉ यथार्थ में देखी गयी, सुनी गयी नारी स्वभाव के इतिहास की कहानियॉ हैं ।

मालती जोशी की कहानियों की सशक्तता एवं उत्कृष्ठता उनके प्रभावी चरित्र चित्रण में है ।उसी प्रकार उनकी भाषा शैली में भी जादूई शक्ति दिखाई देती है । पाठके इसे पढते समय अभिभूत हुए बिना नही रहता ।

मालती जोशी की भाषा में जहॉ एक ओर प्रसाद एवं माधुर्य गुण पाए जाते है दूसरी ओर उसमें आवेश एवं आवेग की धारा स्पष्ट होती है । सांकेतिकता आपकी भाषा की महत्वपूर्ण शक्ति है । आपकी करुणाप्लावित भाषा पाठकों को द्रवित करने की सामर्थ्य रखती है । उदा. ' वे कुछ नाही बोले, लेकिन उनकी पलकों पर चमकते ओसकण उनकी व्यथा को उजागर कर गए थें ।

भाव मधुर गीतों की स्वयियता मालतीजी की काव्यमय भाषा ने कहानियों में सौंदर्य की अभिवृध्दि की है । यथा -- " शादी के सपने हर लडकी देखती है और उन सपनों से जुडी होती है " सुहागरात की मनोरम कल्पनाएँ । चाँदी की घंटियों सी मधुर, रेशम की लडियों सी मादक, चाँदनी में नहाई वह रात मेरे सपनों में बार बार आयी थी "

कहानियों में प्रयक्त मुहावरें मालती जोशी की भाषा में चार चाँद लगा देते हैं । आपके मुहावरें पर आपके संगीत प्रिय प्रभाव अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है जैसे ---- " सांबर में मिर्ची का पंचम सुरे में बोला 'तथा' रात भर पेट में आडा चौताला बजाते रहना' आदि ।

इनकी कहानियों में प्रसंगानुरुप अंग्रेजी, उर्दू, मराठी तथा बुंदेलखंडी एवं मालव की भाषा के शब्दोंका प्रयोग अपनी भाषा को अधिक संपन्न और समृध्द बना देता है । सही शब्दों की पहचान, प्रयोग मालती जी की महत्वपूर्ण विशेषता है । इसी कारण आप शब्द शिल्पी भी है ।

शैली की दृष्टि से मालती जोशी की कहानियों में विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग हुआ है । आपकी कहानियों में आत्मचरितात्मक शैली अपनाने का आग्रह अधिक दिखाई पडता है । पात्रों का चरित्र -- चित्रण लेखिका ने जिस रुप में किया है, वह उनकी शैली की मनोवैज्ञानिक विश्लेषण क्षमता का साक्षात है । इसी प्रकार मालती जोशी ने आवश्यकतानुसार पूर्वदीप्ति शैली, संवादात्मक शैली, वर्णन शैली, पत्र शैली, उध्दरण शैली आदि रचना शैलियों को भी प्रश्रय दिया है ।

इनकी कहानियों में शीर्षक आकर्षक अर्थबोधक, रोचक, कुतुहल वर्धक, सांकेतिक एवं काव्यमय है ।

इस प्रकार मालती जोशी की कहानियों में उनका कथ्य सच्चाई का यथार्थ का रुप दिखाई देता है जो लेखिका ने आँखो से देखी घटना, कानों सेसुनी बात पर कल्पना से वादकर दैनंदिन जीवन की गाथा ही अभिव्यंजित कीया है । कथाकार के रुप में जो ख्याति हासिल की है वह अपने आप में गौरव की बात है । इन्ही विशेषताओं के कारण वह आज के साहित्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय हो रही है ।